श्रीमद्भागवतम् से एक श्लोक

११.२.३६

अपने अन्तर-स्वभाव के साथ सामंजस्य रखते हुए
तुम जो भी कर्म करो, चाहे वह काया, वाचा, मन, इन्द्रियों, बुद्धि या आत्मा द्वारा किया गया हो,
उस हर कर्म को नारायण यानी परमेश्वर को समर्पित करना चाहिए।[१]

©२०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] अंग्रेज़ी भाषान्तर, बॅन विलियम्स् द्वारा ©२०१९ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।